Kisan Shikshan Prasarak Mandal,
Borgoan (Kale) Tq. & Dist. Latur's

NAAC Accredited 'B' Grade

Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki. Tq & Dist - Osmanabad.

&

Akhil Maharashtra Itihas Parishad, Pune

Jointly Organize

One Day International Conference on

"The History of Pandemic like Covid-19 & Its Impat on Socio-Economic & Political Sectors in the World"

Tuesday, 20th October 2020

ISSN No. : 2278-9308
Impact Factor : 7.675

Editor	Chief Editor	Executive Editor
Dr. N. P. Manale	**Dr. Satish Kadam**	**Dr. Haridas Fere**
(Convenor)	(President, AMIP)	(Principal)

Organized by

Department of History

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgoan (Kale) Tq. & Dist. Latur's

VASANTRAO KALE MAHAVIDYALAYA, DHOKI

Tq & Dist.- Osmanabad - 413508

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgaon (Kale) Tq. & Dist. Ltaur's

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki,

Tq. & Dist. Osmanabad. (M.S.) - 413508

Special Issue published by

B.Aadhar
Multi Disciplinary
Research Journal

Peer Review and Indexed Journal
Impact Factor - **7.675**
Web Site ***www.aadharsocial.com***

Co-Executive Editor
Mr. Virag Gawande

One Day International Conference on

'The History of Pandemic like Covid-19 & its Impact on Socio-Economic & Political Sectors in the World'

20 October 2020.

Organized by

K.S.P.M.'S

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki,

Tq. & Dist. Osmanabad

(Department of History)

&

Akhil Maharashtra Itihas Parishad, Pune

Editor	Chief Editor	Executive Editor
Dr. N.P. Manale	**Dr. Satish Kadam**	**Dr. Haridas Fere**
(Convener)	(President, AMIP)	(Principal)

मालाला भाव राहीला नाही. तो मोठया प्रमाणावर वाया गेल्याने शेतक–यांचे मोठे नुकसान झाले. त्यामुळे संपूर्ण ग्रामीण जीवन कोलमडून गेले.

संशोधनाचे महत्व :प्रस्तुत संशोधनात Covid 19 महामारी मुळे ग्रामीण व शहरी जीवनावर होणारा परिणाम यांचे अध्ययन करण्यात आले आहे.

संशोधनाची उददीष्#

1. Covid 19 महामारी पार्श्वभूमी अभ्यासणे.
2. भारतातील Covid 19 महामारी वर नियंत्रण ठेवण्यासाठी करण्यात आलेल्या उपाययोजना अभ्यासणे.
3. भारतीय अर्थव्यवस्थेतरCovid 19 चे होणारे परिणाम अभ्यासणे.
4. Covid 19 महामारीचा ग्रामीण व शहरी भागाच्या जीवनावर होणारा परिणाम अभ्यासणे.

निष्कर्ष :

1. संपूर्ण जगात Covid 19 महामारीचा प्रादुर्भाव हा निष्काळजीपणा घेतल्याने झाल्याचे दिसते.
2. Covid 19 महामारी रोखण्यासाठी भारत सरकारने कठोर उपाययोजना राबविल्या.
3. Covid 19 महामारीचे मोठे दुष्परीणाम ग्रामीण व शहरी भागावर झाल्याचे दिसते.
4. लॉकडाउन मुळे महामारी चा संसर्ग रोखण्यात यश मिळाले असले तरी लोकांच्या जीवनावर त्याचे अनेक विपरित परीणाम झाल्याचे दिसून येते.

शिफारसी :

1. ग्रामीण व शहरी भागात पुरेसे रोजगार मिळवून देण्यासाठी प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.
2. महामारी मध्ये ज्या लोकांचे आर्थिक नुकसान झाले त्यांना आर्थिक मदत देण्यात यावी
3. उदयोग व व्यवसाय सुरळीत करण्यासाठी धोरण आखण्यात यावे.

संदर्भ :

1. दा. धो. काचोळे, ग्रामीण समाजशास्त्र, कैलास पब्लीकेशन औरंगाबाद
2. समाजीक संशोधन पदधती, पु. ल. भांडारकर
3. नागरी समाजशास्त्र, व्ही. एन. सिंह, जनमेजय सिंक
4. टाईम्स ऑफ इंडीया न्युजपेपर, 2020
5. W.H.O. रिपोर्ट, 2020
6. ग्रामीण व नागरी भुगोल. डॉ. शैलेश वाघ, अर्थव पब्लीकेशन

महामारी : इतिहास तथा सामाजिक व आर्थिक परिणाम

प्रा. नयन भादुले -राजमाने
गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी (रात्रीचे) वाणिज्य महाविद्यालय लातूर.

प्रस्तावना:

कोरोना वायरस (कोविड-१९) के बढते मामलों को देखते हुए विश्व स्वास्थ संगठन ने इसे पैन्डेमिक घोषित कर दिया है। लेकिन पैन्डेमिक या महामारी किसे कहते हैं?

मेरियम वेबस्टर कहते हैं "दुनिया के एब बडे भूभाग में फैलनेवाली किसी ऐसी बीमारी को पैन्डेमिक याने महामारी कहते है। जिससे जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा प्रभावित होता है।"

- यह कोई नई बात नहीं १९१८ में स्पॅनिश फ्लू दुनिया भर में ५ करोड़ लोगों की मौत का कारण बना। १५ से ३४ साल उम्र के लोग खासकर इससे प्रभावित हुए थे।
- एशियाई फ्लू १९५७ की इस महामारी की पहली रिपोर्ट सिंगापूर से मिली थी।
- हांग कांग फ्लू १९६८ में हाँगकांग में आई इस महामारी में ५ लाख लोगों की मौत हुई। इस बीमारी ने एशिया और युरोप में अपने पैर पसारे। वियतनाम से लौट रहे सैनिकों के जरिए ये वायरस अमरिका पहुंचा। अमरिका में इसके कारण हजारों जानें गई।
- स्वाईन फ्लू २००९ के स्वाइन फ्लू के कारण २ लाख लोगों की जानें गई। इसका पहला मामला मेक्सिको में सामने आया। ये वायरस सूअरों को संक्रमित करने वाले फ्लू वायरस से मिलना जुलता था। फ्लू संक्रमण के कारण कम ही लोगों की मौत होती है। वही एच आई वी. और पोलिया वायरस बेहद घातक साबित हो सकते हैं।
- एच आई वी / एड्स पहली बार १९८१ में अमरिका में इसका मामला सामने आया। इस वायरस से दुनिया भर में ७.५ करोड लोग संक्रमित हुए। अब तक यह ३.२ करोड मौतों का कारण बना है।
- कोविड १९ के कारण अब तक हजारों से अधिक मौतें हो चुकी हैं। कोरोना महामारी ने भारत में अहिस्ता-अहिस्ता पाँव पसारना शुरू किया था। लेकिन संक्रमण का पहला पुष्ट मामना दर्ज होने के छह महीने बाद वो रूस को पीछे छोड़कर संक्रमितों के मामले में दुनिया का तिसरा सबसे अधिक कोरोना प्रभावित देश बन गया है।

भारत दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। यहाँ शहरों में घनी आबादी रहती हैं। ऐसे में शायद इसकी आशंका अधिक है कि भारत कोरोना वायरस महामारी का ग्लोबल हॉटस्पॉट बन जाएगा।

लेकिन कोरोना संक्रमण और इस महामारी से मरने वालों के जो आंकडे दिये जा रहे हैं, उस पर सवाल उठ रहे हैं, क्योंकि भारत में कोविड टेस्टिंग उस पैमाने पर नहीं हो रही और महामारी से जितनी कम संख्या में लोगों की मौतें हुई हैं, उससे भी वैज्ञानिक आश्चर्यचकित हैं।

भारत में कोरोना संक्रमण के मामले तेजी से बढ रहे है। हाल के दिनों में भारत में कई बार रिकॉर्ड संख्या में कोरोना संक्रमण के मामले दर्ज किये गए हैं। हज़ारों मामले रोज़ाना के हिसाब से रिपोर्ट किये जा रहे हैं और ऐसा कई दिनों से हो रहा है। भारत में कोरोना संक्रमण के सबसे अधिक पृष्ट मामले जून में दर्ज किया गए। बेहद सख्ती से लागू किये गए लॉकडाऊन को खोलने के कुछ ही हफ्तों के भीतर ये हुआ। जुलाई में तो ये बढ़कर रोज़ाना २० हज़ार से भी ज्यादा हो गए। नौ जुलाई तक भारत में कोरोना संक्रमण के कुल ७ लाख ६७ हज़ार २९६ मामले दर्ज किय गए हैं।

मई के महिने में २६ हजार लोगों का कोरोना टेस्ट कराया था। जिससे पता चला कि ०.७३ फिसदी लोग संक्रमित थे।

डॉ. शाहिद जमील के अनुसार "केवल यही वो आकड़े थे जो देश भर की तस्वीर पेश करते हैं, और उन्हें इन्हीं आंकड़ों के साथ काम करना है।" तथा वे यह भी कहते है, "अगर आप ज्यादा टेस्टिंग करेंगे तो आपको संक्रमण के ज्यादा मामले मिलेंगे।"

संख्या के लिहाज से भारत में कोरोना संक्रमण के मामले अधिक हैं। लेकिन आबादी के अनुपात से संक्रमण के मामलों को देखें, तो ये तुलनात्मक रूप से कम है। क्योंकि डॉ. जमील कहते है कि यहाँ टेस्टिंग ही बहुत कम हई है।

भारत में ठीक होने वाले लोगों की संख्या उम्मीद बढ़ाने वाली हैं। आंकड़ें बताते हैं कि भारत में जितने लोग कोरोना से संक्रमित हो रहे हैं या फिर इस महामारी के कारण मर रहे है, उससे ज्यादा लोग संक्रमित होने के बाद ठीक हो रहे हैं।

भारत में मृत्यु दर बहुत कम है। भारत में कोरोना की वजह से अब तक २०,१६० लोगों की जान जा चुकी है। मरने वालों की संख्या लिहाज़ से देखें तो भारत दुनिया का आठवां सबसे ज़्यादा प्रभावित देश है।

इस बार में डॉ. शमिका रवि का कहना है कि, 'भारत में मौत के सभी मामले रिपोर्ट नहीं हुए होंगे, इसकी पूरी संभावना है और इससे भारत और युरोप के मृत्यू दर के आंकड़ों में जो फ़ासला है, उसकी वजह पता नहीं चलती।

महामारी के वजह से आम इन्सान को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है। जो लोग नोकरी पर है वे ऑफिस का काम घर बैठकर भी कर सकते है। लेकिन जो हाथ पर पेट लेकर घुमते है उनकी हालत खराब है। अनेकों लोगों की नौकरी चली गई है। इस कोरोना वायरस ने इकॉनमी पर तगड़ी चोट की है।

क्लामेंट चेंज की तरह से ही कोरोना वायरस हमारी आर्थिक संरचना की ही एक आंशिक समस्या है। हालांकि, दोनों पर्यावरण या प्राकृतिक समस्याएं प्रतीत होती हैं, लेकिन ये सामाजिक रूप पर आधारित हैं।

लॉकडाऊन की वजह से ग्लोबल इकॉनमी पर प्रेशर पड़ रह है। हमें गंभीर मंदी आती दिख रही है। आर्थिक गतिविधीयाँ ठप पड़ गई है। मूल रूप में अर्थव्यवस्था के जरिए हम अपने संसाधनों का उन चीजों को बनाने में इस्तेमाल करने हैं जिनकी जरूरत हमें जिंदा रहने के लिए है।

मौजूदा वक्त में ग्लोबल इकॉनमी का मकसद पैसे के एक्सचेंज की सुविधा देना है। अर्थशास्त्री इसे इक्सचेंज वैल्यू कहते है। लोग बेमतलब की नौकरियां करने के लिए मजबूर हैं क्योंकि एक ऐसे समाज में जहां इकॉनमी को गाइडिंग प्रिंसिपल एकक्सचेंज वैल्यू में निहित है, जीवन के लिए जरूरी मूल चीजें मुख्य तौर पर मर्किट्स के जरिए मिलती है। इसका मतलब यह है कि आपको उन्हें खरीदना पडता है और उन्हें खरीदने के लिए आपको तनख्याह चाहिए होती है, जो कि एक नोकरी से आती है।

होटल, रेस्टॉरंट और हवाई जहाज सहित पारंपारिक एनालॉग व्यवसाय के संकटग्रस्त होने के कारण भौतिक एनालॉग विश्व खत्म हो रहा है। हालांकि इस महामारी के समय प्राद्योगिकी मदद से डिजिटल विश्व तेजी से उभर रहा है। हर कोई घर में बैठा है और दुनिया के साथ उनके संपर्क का माध्यम स्मार्टफोन बन गया है।

महामारी के बाद उभरनेवाली दुनिया में आज की तरह हर जगह प्राद्योगिकी होगी और तकनीकी कंपनियां और भी शक्तिशाली बन जाएंगी और उनका अधिक वर्चस्व होगा। इसमें जून जैसी छोटी फर्मे गुगल, एप्पल, फेसबुक और पेपॉल जैसी बड़ी कंपनियां शामिल हैं। कोविड-१९ के बाद की दुनिया में, इस बात का अनुमान है की हमारे पास कम टच स्क्रीन होंगे।

यह महामारी का संकट समाज को नाटकीय तरीके से, बेहतर या बदतर बना सकता हैं। कोरोना वायरस की महामारी स्थायी तरीकों से समाज को नयी आकृति प्रदान करेगी और लोंगो के यात्रा करने, घर खरिदने, सुरक्षा एवं निगरानी तथा यहां तक कि भाषा के प्रयोग के तौर-तरिकों के बारे में बदलाव आएगा।

हम सबको अपने-अपने घरों में बंद रखनेवाला यह वायरस जो सरकार के साथ, बाहर की दुनिया के साथ और यहां तक कि एक दूसरे के साथ हमारे संबंधों को बदल रहा है तो हो सकता है कि यह महीनों तक रहे। आने वाले महिनों और सालों के दौरान हम जो परिवर्तन महसूस करेंगे उनसे हम अपरिचित हो सकता है। और ये परिवर्तन हमारे लिए मुश्किल हो सकता है। इनसे कई समस्याऐं या सवाल हमारे सामने खड़े है - क्या विभिन्न देशों से संपर्क बंद हो जाएगा? क्या स्पर्श वर्जित

हो जाएगा? रेस्टॉरंटओं और यात्राओं का क्या होगा? स्वास्थ क्लाबों में किस व्यवहार का प्रदर्शन किया जाएगा? विभिन्न चीजों को छूना, अन्य लोगों से मिलना-जुलना और बंद जगह की हवा में सांस लेना खतरनाक हो सकता है। अन्य लोगों की उपस्थिती के कारण हमें जो आनंद होता था, वह लुप्त हो जाएगा। लोग भीड़ पर अविश्वास करेंगे। सामाजिक मेल-मिलाप सीमित होंगे। आने वाले समय में हम कार्यस्थल, स्कूलों में और सार्वजनिक जगहों पर किस तरह व्यवहार करेंगे ओर यहाँ तक कि बच्चे मिलकर कैसे खेलेंगे। कोरोना वायरस के कारण सामाजिक तानेबाने में जो दरारें आएगी उन्हें दूर नहीं किया जा सकेगा।

महामारी ने विभिन्न तरिकों से धर्म के प्रभावित किया है। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और चर्च जैसे विभिन्न धर्मों से जुड़े पूजा के स्थल बंद हो गए तथा विभिन्न त्यौहारों एवं पर्वों से जुड़ी तीर्थयात्राओं पर रोग लग गई।

कोरोना से बचने के लिए सावधानियों को अपनाया जाना चाहिए -

१) अलग हो जाना या अलग रहना-

कोविड-१९ के प्रकोप से प्रभावित देशों से आने वाले किसी भी व्यक्ति को लक्षणों की परवाह किए बिना १४ दिनों के लिए अलग रखा जा रहा है। इसका पालन करना होगा।

२) संपर्को की निगरानी रखना -

यदि कोई व्यक्ति पॉजिटिव पाया गया है तो उस व्यक्ति और उसके संपर्क में आनेवाले हर व्यक्ति को निगरानी में रखा जा सकता है। यदि उनमें कुछ लक्षण दिखते हैं तो
उनका परिक्षण किया जाता है और उन्हें अलग भी किया जाता है।

३) जहाँ पर भीड़ है वहाँ न जाए -

भीड़-भाड़ वाले इलाकों में जाने से बचना, चाहिए। अधिकतर राज्यों में स्कूल, सिनेमा हॉल बंद है या वे सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित नहीं कर रहे हैं।

४) जागरुकता -

सार्वजनिक तौर पर हाथ की स्वच्छता और श्वसन (सांस संबंधी) शिष्टाचार के बारे में लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

५) तैयारियां -

बुनियादे ढांचे को बड़ा करना। परिक्षण, सुविधाँ, आइसोलेशन बिस्तर और पॉजिटिव मामलों का तीव्र प्रबंधन एक साथ जगह ले रहा है।

अंत: हम कह सकते है, कोरोना वायरस के कारण जो आर्थिक, समाजिक, सांस्कृतिक, तनाव समाने आये है, उसे देखते हुए ताकतवर देशों की शक्ति प्रतिद्वंद्विता और ज्यादा बढ़ेगी। महामारी में अगर हम एक होकर रहे। कुछ दिन हमें सामाजिक दुरियां बनाए रखती है। सरकार के द्वारा किए गए लॉक डाऊन में निर्देशों को पालन करना है तो निश्चित रूप से कोरोना हमारे देश से बहार जाने को मजबूर होगा।

संदर्भ :

१. www. bbc. com
२. www. medtalks.in/ artical
३. hindi. news click.in
४. swaikshikduniya. page